

तिक औषध को द्वाय के केरु कार स संग यानुः दाह नृवा मू द्वा प्रमः
 ए ति अ व गु हरः ज सो शिव चित्तो के पा प जाः त सो पित्त ज्वर जाः धि उ मा
 औ ला भु णि चू रा कै करण को पा नित ता तो कै ले प क नुः कि वा का जि हा ल
 नुः दा हा शां त हो किः वा वे ला का पा त पि शि ले प क नुः दा ह शां त हो ई ॥ ई
 ति पित्त ज्वरः ॥ नी मः श्रु होः पि प ल मो डः हर डोः क ट्ठी कीः जों र ज वृ क्ष को
 को शोः ॥ तिक व र व रि द्वा य कै दि नुः श्रे ष्ठा ज्वर हरः इति श्रे ष्ठा ज्वरे ॥

वाशिङ्गः अनीमः कूट वारः भुठोः मोघोः इति वरावरि जागवै काण
कैपीनुः श्लेष्मज्वरहरः इति श्लेष्मज्वरेः हरडाः वरडाः औलोः शिम
लरास्मानि होतः गुर्जोः किडा उलोः वाशिङ्ग इति वषध्व वरावरि जाग
गरिकोथ पकाई धानु प्रातः कोरमाः वातज्वरहरं पित्तज्वरहरं ॥ जेष्ठि
महः किर्मेडोः चुतरोः गोलाका कडिः किलो उलोः मोघोः निम कि छात
एति वेषध्व वरावरि गरिकाथ पकाइ निजो डि पिनुः वातपित्तज्वरहरः
इति वातपित्तज्वरे ॥ देवारः हरेडोः निमः कफूकीः त्रिफलाः मोघोः गो

लाका कडिः एति कको काथ कैनिः चोडि पिनुः संनिपातहरः ॥ बुद्धि वस्त
लेः घिउनेल काथानालेः रुखाथानालेः निताथानालेः गुलियाथानालेः
सेतापलेः शायिवस्तुलेः शाढिवस्तुलेः रिशलेः रुधिवस्तुलेः खरिग
रुइवस्तुलेः माश्रयाथालेः नलिवस्तुथामालेः शीत होई श्रम होई अ
म होई विंता होई खरोः स्त्री प्रसंग नयालेः वसंत अतुः किंवा वर्याः
अतु किंवा सरड अतु शोनि पात उज्जः यरो पानियालेः सम विष नया
लेः दिन शुनिरयालेः रावि जागीर ह्यालेः इति छे प्रकार ले रोग उज्जः ॥

अथ सन्निपातज्वरे रसः ॥ शुद्ध पारो जाग व गे च के जाग २ शुद्ध अत्र के जा
 गर मूशली कार सले मर्दन गनुः कुपा हाल नुः कुपा को मुख जलिके
 के पडा मरि लाउनुः सुषमा घाडि को बु जो डिनुः रोचनुः एक प्रहर उ
 पला कि अग्नि दिनुः शीतल जया पदि कुपि को मोष दो गा डि मर्दुः
 जिरोः चितोः शा जि घारः श्वा गः गुग्गुलुः शी ओ नूनः शौच नूनः डी
 डे नूनः सामरि नूः समुद्र नूः जौ घारः ज्वानूः को इड का वि जाः वि
 फलाः भुटोः मरि चः पि पलाः यसू का जाग व रा वरि २२ भाग जु

अथ रसः ॥ शुद्ध पारो जाग व गे च के जाग २ शुद्ध अत्र के जा
 गर मूशली कार सले मर्दन गनुः कुपा हाल नुः कुपा को मुख जलिके
 के पडा मरि लाउनुः सुषमा घाडि को बु जो डिनुः रोचनुः एक प्रहर उ
 पला कि अग्नि दिनुः शीतल जया पदि कुपि को मोष दो गा डि मर्दुः
 जिरोः चितोः शा जि घारः श्वा गः गुग्गुलुः शी ओ नूनः शौच नूनः डी
 डे नूनः सामरि नूः समुद्र नूः जौ घारः ज्वानूः को इड का वि जाः वि
 फलाः भुटोः मरि चः पि पलाः यसू का जाग व रा वरि २२ भाग जु

परि

परि जागगनुः धतुराकारसरे एक दिन स दिनः तव सिद्ध होः रति २
भुठो सरिचः पिपला को वृणः अनुपान कनुः सनिपात ज्वर हरः
इति पंचवक्त्ररसः ॥ गंधक जाग ४ पारो जाग ४ अत्रक जाग ४ः
शाजि घार जाग ५ जौ घार जाग २ शिष्योः सौवलो ५ कोइका वि
जाग ५ सा सरिः डिरोः स मुड नूनः जाग इति पंचनून जाग ५ हरडा
बहुडा जाग २ भुठो जाग ५ सरिच जाग ५ पिपला जाग ५ सोफा

४

३

कालो जिरो जाग ५ वितो जा ५ जवान् जाग ५ हिंग जाग ५ विंडंग जाग ५
गुग्गु जाग ५ इति सिलाई वुन गर बु सिद्ध प्रा रो श्वर रस होः विडोष स
निपात हरः ॥ विडोष ज्वर हरः इति सिद्ध प्रा रो श्वर रस ॥ पारो जाग ५
गंधक जाग ५ बिष जाग ति ३ धतुला का वियाः भुठोः सरिचः पिप
ला जाग ४ इति सिलाई वृण गनुः सिद्ध होः ॥ रति ५ किंवार ति २ किं सा
वाकर्तिः आदि कार स स गः किंवाः जां विरका गुदा कार स स गदि

का
 नुसुहिके द्वाहिके आहिके चातुर्थिकादि ज्वरहर विषाज्वरहर ॥
 इति महाज्वराकुशरसः ॥ शुद्धनिलानुषा भाग १ शुद्धहरिताल भा
 ग २ चूना भाग ३ ३ तिज्जोषधि घिउ कुवारिकारसले जलिके सह
 निजो लिवाधनी शुकाई मोश डाहा लनी मोश डी के परा मातिला
 ईके शुकाउनु नवउपलाकि अग्निदिनु गजपूट करणी शीतल
 भया चौथा प्रहर उतारणी फिरी जलिके सहनी नवलिख होर
 ति १ किंवार ति २ सात्राघाउ संग घानुः दुद जात पथ्या दिनु घटिव सव

न नीरसरसका प्रभावलेः सर्वज्वररुलंति संदेह नातिः ॥ इति ज्वरके
 सरीरसः ॥ सजिको फूलः जडो गलावाधनः चौथो ज्वरजाः नखले स
 रुदेविको जडो २ जडो कसरवाधनाः ज्वरसर्वे जानः ॥ नागो होः सह
 देविको जडो उपाडि शिखावाधनुः ज्वरजाः आन्वारवार साजिको ज
 डो सात सून्यागो रातो के कठवाधन ते जरो जाः १ ४ को जडो ऐतार
 वार हात वाधनु विषमज्वरजाः जोरजको जडो के कठवाधन राविज्व
 रते ज्वरोः एकैतज्वरजाः समसासदेविको जडो हात वाधनः सर्वज्व

सुंरिजाः स्मसानदवाको जरी शिखावाचनूरा विज्वरजाः स्मसानददिको ज
 हो शिवाधनूरा विज्वरजाः संजतं त्रिओषधीनलागतग्रहसात्तिकर्नि
 तवसूयहोः इति ज्वरतेवे ॥ पारो जागयक १ अश्रु के भाग १ गंधक
 भाग १ सार्वभाग ३ सायोसारभाग ४ शंखभाग ८ वनका उपलाको
 भस्मभाग १६ विषभाग १ एतिकाः सवै ज्योषधी अलिकैसरदि सिद्ध
 हो आटा कारस संगरतिर सात्रादिनूः विदोषहरः संनिपातहरः प्र
 सूतिवातहरः गुग्गुलुः गुर्जाकारसं विफला संगदिनू तदनाइकर

जाइफलसंगज्जतीससंगसग्रहणीहरः इति प्रतापलेके श्वरो
 रसः ॥ पारोगंधकस्यागभाग ३ विषभाग ३ सरिचभाग ८ काडि
 भाग १ संखभाग १ जं विरकारसलेदिन १ ससजावनादिन सदि
 नू सिद्ध होः विसूचिकारं सै अजिन पांडुरोगः वायुरोग सर्वहर
 नूः इति अग्नि कुसारो रसः ॥ पारो जाग १ गंधकभाग १ इंगुल भाग १
 धतूरा काविया भाग ६ आफिम भाग १ इति ओषधिति रूरा कनूः
 सिद्ध होः रति १ सात्राः जिराः जाइफलः संगजानूः सवै अतिसारहरः

धिउसरिर्वसंगदिया प्रवाहिकाहरेत् ॥ इति अगस्तिसराज ॥ पारो
भाग ५ गद्य के इंगुल जागर आफीम भाग ४ अतुरा को विया जागर ४
विष जाग ५ सर्वसं सद्धु सिद्ध होः इति अगस्तिसराज ॥ हरे ओपिप
लीसरिवः स्याह दानाः निमोष अतीतः रेवंत वीनीः चिरा इनाः रा
तिजमाल गोठ के वीर सरा दूड के धिउ से तो धनु वरा वरि भाग
के एतू कए क लो क पिसि र सि ५ की गोरि के रे नीः गाइ को दूडः

संग घानूः जूला पहोः क्षो होरा जाग ९ गुजर ति वंद ३ फला जाग ३ तबु
६ भाग ३। शीधा नून भाग ९ काला नून भाग ९ ज्या उ नू जाग ९ श्रेत जीराः
स्याह जीरा भाग ३ लिग भाग ९ इति सिला इ पिसि वर्रा के केः कपडा में छा
निके कागति निम्ब कारसः पूढे ना कार सले गो ह वा धनू मा सार के प्रा
त काल छा नि व नः होइ क्षुधा होइ ता ता पानी सये खाया दूध होइ
दना सला ५ आ फी न ना सा २ माजू ० बड का जडो को मतये सा जरि एतू
कए कै री स दू सतः ९ गोली के नूः आनी सर्वा ती सा २ रु ॥ पैसा ९ जरि गो

दूतीलतार आके के दूड मा सटिके ढोरा मे धरि के तिसके निवे जाग मा सार
उपर जाग सा सार राखि के सटिके के ढोरा मे ठा कि पो नि के भाग के भीतर हा
रि के उपर के ऊ ले दी के प्रहर ४ सिद्ध हो पिह्लि के सा सा ५ मात्राः नृत्त सिप
त्रसंग दिनुः सब ज्वर हर न पकि हरिताल अये नरिः नृत्त सा सार क्षोह
रा सा सार पत कु सारि गु दि अये ला भरिः इति एक तो के के स र्द ना पो
ला ३ के के सू का उ ना मा तो कि हरिया भीत्र हो लि के सख धा कि पो नि
के सू का उ नाः पि रि उ प ता त कि अग्नि दिनु प्रहर ४ शुच होः॥ पिह्लि के

गहरः वायु रि का सूत्र संग घा ना जरे हर हरः पुर सा नि अज वाहन संग
घा ना वायु गो लाहः षेय संग घा नाः धातू पूष्ट हो लाः सहतः मिश्रिः जा
इ फल संग घा नाः इन्द्रि दू हो लाः पान संगः वे रि का पात संग घा ना देह पु
ष्ट हो लाः गुरु रूः अरि र्व संग घा ना जुंग वायु जाः प्रेमी कि स ठा संग घा या वा
यु गो ला हर ॥ ॥ अथः गौ दं ति हरिताल सा र रा म् ॥ गौ दं ती हरिताल
पै सार ५ रि लिनुः सो णि दू वः थो णि दू व अये ति फ र्गी रीः एक त्व करि के स
रि ॥ गौ वर जे सा व ना उ नाः जागर कर्ना ५ एक जाग या लि के ता मे हरि

॥ लकी डेली राखि के घटि कार सो धनी: दो सरा भाग ओ घधी के प्रित
 रह रिता लकी डेलि सनेत हा लनी ना के बा हिर क परा सा टिले पक नी
 भुका उ ना: प्रहर २ गिनु बा गुई ठा का आवटि न: सितल जया पदि नि
 का तन: व कला कि पोष जल से तो जया पदि शुद्ध हो: रति २१३ ति न कि
 सा ना गर न: पान का पात सगटि न: सर्व रोग हर: जाइ फल: सह मिश्रि: संग पनि
 दि न ॥ गुरां शे को फूल के वै को जडो: अंगार: ए ति थो क मिलाइ हानि पिउनु: खरो
 जा: यो सो: सह: ता तो पानि संग पिउनु: उखारो: गुड: मरि व घान: माल पुक: मुसलि व वा संग घा

११

नुर तो जिजा: मूरालि जात संग घान: ईन्दी जागत: मुसलि वौ हानि संग घान: स्त्री प्रसू ति हो: मू
 शलि अदुवा संग घान: भूल जा: मूरालि पि पलि संग घान: फियो जा: सिउड का दू पा जो लि नि
 चोडि या को पानि पिउनु गाड मूक: अस्या लू को दू कु दो वौ लानि संग घान: से तो प्रमो जान:
 भौत घरो भया श्री खंड घो टि क सरी खाउ घान: निको हो: समूद फल निम्बु कार सघो टि
 ले प गर न: सर्व घटि रा जान: समूद फल गो घृत संग जे ना आघा को जाल जा: समू
 द फल घो टि लाउनु नाइ का घटि रो पाक: वृ ल्या पाला त्या पि पला संग घा या ना स
 र आव: का क जं घा को जरो रो घन घो लाउनु: राजा व स्य हा: ॥ अथ सा दूर गोली: ॥

हिंरुतोला १ वचतोला २ वायुविडंगतोला ३ सिंधान्नतोला ४ जीरोतोला ५ शुठतोला ६
 मरिचतोला ७ त्रिपलतोला ८ कुठतोला ९ हरडातोला १० वनजंटेतोला ११ बरेतोला १२
 अजमोदातोला १३ टंककेमासा १४ यतिश्रीषधिमितार्कधाईमैपकाउनः
 गुडकापाकगनुरग्निरगरुः क्षोटीवैरीप्रामानश्लीवायैः प्रातकालघान्नः महा
 गूराहोईः असिवाहनाः हरसजाः अठारहगुलमप्रमेहजाः सर्वहृदयकोलोग
 जाः उट्टरश्रुरजाः वातः गुल्मः गलाकेगंडमालः ग्रहस्वासाः कासः घुमाणीः सेहुवा
 रसूषलोसांकनीजाः चूतप्रेतवेसालः लूताफराडाजाः विषउपरगोलीदीजे

१२

गर्भमैदीजेः वेटनाजाः लोहीविकारजाः गुडदूनीडालिकेबनाउनुवनवेरि
 प्रमानगोलीवाधियेः इतिशार्दूरगोली ॥ श्रीषधिश्वासकि ॥ अरुसाकेपिहले
 पातसूकोइकेचूर्णाकर्नापिप्यलीपैसा २ अरिताकेचूर्णाः दोनोकेचूरामि
 लाउतः तातापानिसंगपिउतः स्वासः कासः हरः समूढफलकागूराः ॥ चीनीः
 मोषाः प्रमेहजाः वाजूडीनामैः हरडाः अवलाः समसात्राकरिकेगोष्टतसा
 पिबैश्वेतकुष्ठजाः समजाग ८ १ मासमंडलः मोषायितोहाडकल्यहोईः व
 चपुः गानीमैषायतदिन २ पितजाईः गोष्टतमोषाहोपमिनाजाइः हरोडो

क

साधइ तो रक्त पित्र जाइः व क र के सूत्र तो अंजन करै तो र तो टि जाईः प्राग
 ररत मै घ सिका न मै मै लै तो ब हिर जाइः नी व के पान तो अंजे तो तिसिर जा
 इः पानि मै घ सी पिजे तो र का ज्वरो जाइः घ सी टी को करै तो सोहन होइः दू जा
 न सो घा वै तो संजन होइः आ क के र स लो या वै तो पेन किं मि स र ॥ वंगः नाग १३
 र सः ग्रंथ कः पारोः क ज्ज लीः सूर स पाने के आनिः नाग युक्त के करि आव देव
 तिलि धि व यानि ॥ ॥ अन्य ॥ ॥ असिली पि प ल की त्व वा पि सी मि हि व र्णा के
 रे सरवर मन मिल पी सी के जुत तो उ करि देउ कांजी के र स म र्दि ये संपूत

अहर साही साठि अग्नि सै नाग है अमृत गुण प्रमनाहि यही यही किया
 गज पूट करै क्षालि ध लि आ रो धि नाग वंग दो नो म त्त कियाः और बुधि
 बोध सुंदर मा गी की निराधि चतुर कर रही लेहि नाग वंग अरु विंता व
 र न द ई चारि नाम बूहा सैं अग्नि लोह क र्दू ली वालि नाग वंग इ हि विधि
 सुफल क्षूट म क ल कु वालि ॥ ॥ अन्य ॥ लेहु के सरे की ल कर प हु चा के
 अनुमान कलित कराही म न्म इ वू हा ध रै सू जान ना ठ रा धि अ
 ध अग्नि करि करि ल करि च ला उ त जाई प हर चारि मै लि धि जो वा

है सो आइ ॥ ॥ रजत भारा ॥ ॥ हरी तार जाग १ रजत पत्र जाग ३ निबूकार सै
 तपाइ के प्रहर ॥ राधनू सरवा संतोइ तिस वनोपर अग्नि देउ पुनः पुनः तालत
 मोइ आव वतू दृश सै सुफल ॥ ॥ सुवरन मखियो छिये सै हड पय सै आनि
 रजत पत्र लेपन करे अग्नि तीस उ पलानि पुनः पुनः याही जल सौ देहि १४
 वतू दृश आव रूपोइ सविधि जस है अति गून सुंदर सांच ॥ अथ तूथ
 मारण ॥ तुथ कट मय जाग सुनि स माज सुहागा नई कपुत्र पारावत
 मंजार की विष्टार स पूटेई ॥ अथ अत्रु कजारन विधि ॥ कछा अत्रु रक

अनल धमे दी जे दूध बुकाई निबू के सजा मय सुबोरे मत्रु स मुजाई पुनः ठु छिणार स
 वोर ई बल मर्दिये ताहि अर्क पत्र पातरी अनल दी जे विधि रिखाहि अर्क क्षीर पूरा
 ओ छिये अग्नि काठ माहि मदन करि आत पत्रु स मरुत संसय नाहि ॥ अथ पारा
 सोधन मार विधि ॥ क्वाग्वारि मूर सै मर्दिये चितक विफला काय एक एक दिन
 तिहू सै द्यो छे विधि जस हाथ बरल करो एक दिन पुनः रस निबू विधितो न पुनः
 नो सां दरयो लिये ई कु मूकुमा माहि इस विधि पारा मुख होई वरनत अममिल नो
 हि ॥ अथ गंध क सोधन म ॥ अग्नि दूध द्यत सो छिये गंध क विधु सुप्र सिद्ध स
 व ओषधि निमिलाइ ये सवर स कि जे सिद्धि ॥ पारा दजारन विधि ॥ कठउ मरी

केटुग्रहमेक्षाहिसुरसमैतानि चरलकीजीयेदिवसजरिनीकीविधिजन
 मानिरसवासंपुष्टा अग्निमृदु अथिकनदि जे आवः ईसविधिपारदप
 स्महेसुवगुनसुंसाव ॥ ॥ अन्यपारे मारद मारणम् ॥ उरगलताकेसुरस
 मेनिपूननीनिमदिनघोठि सरवासंपुष्ट अमुदिठकरि मृदाविधिकपरे
 ठि लघुवनोत्पल आवटे प्रस्मसूनयहिरीति सकलरसनमेयुक्तकरि नि
 षजसप्रमप्रतीत सुक्ताहीरावाजि जुगम सुव मगवाइ सीवनकीजे गंर
 मपररक्तप्रस्महोईजाई ॥ इति पार मारणम् ॥ अथ लोह मारणम् ॥ ॥

पावचलमिहिसरबदुई ममालूजातसरतीनीछाहसुकाइ पाठ सैतह
 कीकीसातहरेटे जीहकरि सुपेठोदैकेवायेतर उपर जेरिवनकेगुठिर
 धिके अग्निदेवेमिहोइ रति १ मात्राः नागरपानसेखावे तो सरिरपुष्ट
 होइ तुलसिपत्रसेखावे तो आतघासे नालमघनासोखावे । स्त्रीकोपैरथा
 मैममुदुसोखसोखाई रतीसात नौविंदकुसादजाई गोदूगसोपिंडरोग
 जा हलदीसोखा बीजवेखसिंटे दारविनीसोखा चूखजगे पिपलिसोखा
 मंदगिजागे अंबलासोखा चूकजगे कसुरिसोखा भंजनहोइ रतीव

गरती अनुपान ॥ तब की हरिनाल पेसा दुइ जरी ॥ ॥ साठिके जड के रस से
छोटे प्रहर ७ पीछे कुहिया से छास करि कुलिया से चरि के कपरा सतिल
गाई दोसर जंगलि गुण मे अग्नि देउ सपेन होई कोत जाई नागर पान
मेघाई दिन ७ तथा दिन १४ गलित कुल जाई पुन ॥ हरिनाल पेसा ४ ज
रिधुतुरा का पुछ ३ न सुकाइ